

मिश्रित कृषि/सहरोपण

चनाहुर लता प्रजाति है। अतः इसके लिए आधारीय वृक्ष एवं छायादार स्थिति अनुकूल होती है। आर्किड वृक्ष सहरोपित किये जा सकते हैं जो चनाहुर की वृद्धि के लिए सहायक होते हैं, हालांकि अभी तक चनाहुर के साथ कोई भी मिश्रित प्रजाति अभिलेखित नहीं की गई है।

रखरखाव

5-7 टन एफ.वाय.एम प्रति हेक्टेयर पौध रोपण हेतु आवश्यक है। इसके बाद खाद की आवश्यकता नहीं होती है। खरपतवार उन्मूलन प्रत्येक 15 दिवस के अंतराल पर नियमित रूप से करना चाहिए।

सिंचाई

आर्द्रतायुक्त भूमि चनाहुर के लिए आदर्श मानी गई है। इसीलिए नियमित सिंचाई नितांत आवश्यक है जिससे उचित आर्द्रता बनी रहे। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भूमि में कहीं भी जलभराव की स्थिति निर्मित न हो। अक्टूबर-नवम्बर में सप्ताह में 2 सिंचाई आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतु में 3 से 5 सिंचाई की सलाह दी जाती है।

रोग एवं कीट प्रबंधन

सामान्यतः चनाहुर में कोई विशिष्ट रोग अथवा कीट संक्रमण नहीं पाया जाता है।

विदीहन प्रबंधन

फसल परिपक्वता एवं विदीहन प्रबंधन

चनाहुर की फसल लगभग आठ माह में तैयार हो जाती है। मार्च-अप्रैल का समय विदीहन हेतु उपयुक्त माना गया है। परिपक्वता पर जड़ खोद कर निकाल लेनी चाहिए एवं अच्छी तरह धोकर हवा में सुखानी चाहिए। पूर्णतः हवा में सूखी हुई जड़ों को वायुरुद्ध डिब्बों में बंद कर देना चाहिए।

रासायनिक संगठन

जड़ एवं बीज में ग्लाइकोसाइड्स एवं डेक्सट्रोस शर्करा पाई जाती है। डेक्सट्रोस शर्करा अपघटित होकर ऐसिटिक एसिड देता है।

उत्पादन एवं लागत मूल्य

चनाहुर की सुखी जड़ का अनुमानित उत्पादन 528 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर है, जबकि लागत लगभग रु. 85,000/- प्रति हेक्टेयर है।



ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले-स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर-482008 (म.प्र.)

संपर्क: 0761-2665540, 9300481678, 9424658622 फ़ैक्स: 0761-2661304

ई-मेल: rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब: <http://www.rcfccentral.org>



क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा

और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019



चनाहुर

(*Marsdenia tenacissima*)



चनाहुर

(*Marsdenia tenacissima*)



कुल	:	एस्कलेपिडेंसी
आयुर्वेदिक नाम	:	मुर्वा
हिन्दी नाम	:	मुर्वा, चनाहुर
व्यापारिक नाम	:	मुर्वा
उपयोगी भाग	:	जड़

औषधकारिक / औषधीय उपयोग

चनाहुर की जड़ गनोरिया, सुचाक तथा उदरशूल के उपचार में प्रयुक्त होती है।

आकारिकीय लक्षण

चनाहुर बहुवर्षीय लता प्रजाति है। इसकी छाल धूसर होती है। पत्तियां 7-15 से.मी. लंबी एवं 7-10 से.मी. चौड़ी होती है। पत्तियां हृदयाकार, फ़ैली हुई चौड़ी होती है एवं उनका अग्रभाग नुकीला होता है। पत्तियों का आधार भाग गोलाकार लिए होता है। पत्तियों की दोनों सतह घने मखमली बालों से घिरी रहती है, परंतु जैसे-जैसे पत्तियां पुरानी होती जाती है, ये चिकनी होती जाती है। पत्तियों का पर्णवृत्त 5-10 से.मी. लंबा रोमयुक्त होता है।

पुष्पीय लक्षण

चनाहुर के पुष्प हरे-पीले रंग के गुच्छों में लगे होते हैं। पंखुडियां 3-4 खण्डों में विभक्त होती है। बाह्यदलपुंज नुकीला, फल रोम छिद्र युक्त लगभग 10-15 से.मी. लम्बे अण्डाकार, ऊर्ध्वाकार, झुर्रियोंयुक्त जोड़ों में लगते है। बीज 1-2 से.मी लम्बे-चपटे एवं अण्डाकार होते है। पुष्पन मार्च-अप्रैल में होता है, जबकि फल मई-जून में लगते है। फलों के पकने पर फल फट जाते है और बीजों का बिखराव होता है।



वितरण

चनाहुर का वितरण पर्णपाती पहाडियों पर विंध्य एवं हिमालय क्षेत्र में पाया जाता है।

जलवायु एवं मृदा

यह उष्ण एवं उपोष्ण पर्णपाती आर्द्र एवं शुष्क वन क्षेत्रों में जहां औसत वर्षा 1000 मि.मी. से 1500 मि.मी. तक होती है, अच्छी तरह वृद्धि करता है। प्राकृतिक स्थिति में यह नम एवं छायादार स्थानों पर वृद्धि करता है। बालूई दोमट मिट्टी कृषिकरण हेतु उपयुक्त पाई गई है। यह कम उपजाऊ भूमि पर भी अच्छी तरह वृद्धि कर सकता है।

प्रवर्द्धन

बीज एवं कटिंग द्वारा व्यापारिक स्तर पर रोपण सामग्री प्रवर्द्धित की जा सकती है। कटिंग द्वारा पौधा तैयार करना ज्यादा सफल पाया गया है। पत्तियों के डंठल एवं कटिंग द्वारा भी पौधा तैयार करना संभव है।

कृषि तकनीक

पौध तैयार करना

कायिक प्रवर्द्धन द्वारा मई-जून में पौध तैयार करना उपयुक्त पाया गया है। ताजी एवं स्वस्थ पत्तियों की कटिंग को जिसमें 2-3 नोड्स हो, को 1000 पी.पी.एम. आई.बी.ए. (इण्डोल 3 ब्यूटरिक एसिड) के विलयन में 60 सेकंड तक डुबाकर लगाना चाहिए। आई.बी.ए. द्वारा उपचारित कटिंग को 10 X 10 से.मी. की दूरी के अंतराल में मिस्ट चैम्बर में लगाना चाहिए। इससे कटिंग में शीघ्रता से जड़ विकसित हो जाती है। जड़ आने के उपरांत कटिंग को 45-60 दिनों के अंदर जुलाई में रोपित कर देना चाहिए। नए संग्रहित बीज उपचारित कर पॉली बैग में मिस्ट चैम्बर में लगाए जा सकते है। स्केरीफाइड बीज से अंकुरण 7 दिनों के अंदर होता है। कटिंग एवं बीज लगाने के लिए मृदा, रेत एवं एफ.वाय.एम का 1:1:1 अनुपात में मिश्रण तैयार करना चाहिए।

बीजों / कटिंग्स की आवश्यकता

बीजों से पौध तैयार करते समय नए संग्रहित बीजों का इस्तेमाल करना चाहिए। कटिंग द्वारा तैयार करीब 30,000 पौध रोपण सामग्री की 1 हेक्टेयर में आवश्यकता होती है। एक हेक्टेयर रोपण हेतु 100 ग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

पौधारीपण

भूमि तैयारी एवं खाद

वर्षा आगमन के पूर्व भूमि तैयार कर लेनी चाहिए। भूमि को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। भूमि की अच्छी तरह से जुताई कर उपयुक्त जल निकासी की व्यवस्था करनी चाहिए। भूमि में जल भराव बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए। भूमि तैयार करते समय 5 टन एफ.वाय.एम प्रति हेक्टेयर आवश्यक है। मृदा एवं एफ.वाय.एम. अच्छी तरह मिश्रित कर लेनी चाहिए।